को प्रभुत्ववादी तथा प्रजातांत्रिक दोनों प्रकार की व्यूह रचना कहा जा सकता है। यह एक उपचारात्मक शिक्षण व्यूह रचना मानी जाती है, जिसका प्रयोग उच्च स्तर के विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में किया जाता है। इसके प्रयोग से छात्र शिक्षण सम्बन्धी अनुभव प्राप्त करते हैं, तथा इसमें निर्देशन एवं परामर्श भी दिया जाता है।

Structure:— इस प्रकार के शिक्षण के लिए कक्षा को छोटे-2 समूहों में विभाजित किया जाता है। तथा एक समूह को एक शिक्षक को सौंप दिया जाता है। यह शिक्षक अपने वर्ग के छात्रों की शिक्षण सम्बन्धी सभी समस्याओं तथा कठिनाइयों का समाधान करके यथासम्भव निर्देशन एवं परामर्श देता है। अनुवर्ग शिक्षण की व्यवस्था तीन प्रकार से की जा सकती है —

1. **Supervised [पर्यवेक्षण अथवा निरीक्षित अनुवर्ग]:-**

इसमें व्यक्तिगत रूप से छात्र तथा शिक्षक नियमित रूप से मिलते हैं, तथा शिक्षक छात्रों के कार्यों का निरीक्षण करता है। यह व्यूह रचना प्रतिभाशाली छात्रों के लिए अधिक प्रभावशाली मानी जाती है।

2. **Grouped [सामूहिक अनुवर्ग शिक्षण]:-**

इस प्रकार का शिक्षण सामान्य स्तर के छात्रों के लिए अधिक उपयोगी होता है; क्योंकि यह उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसमें शिक्षक को छात्रों के मनोविज्ञान का बोध होना चाहिए।

3. **Practical Teaching Strategies:-**
[प्रयोगात्मक अनुवर्ग शिक्षण व्यूह रचना]

इसका प्रयोग व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों प्रकार से छात्रों को शिक्षण देने में किया जाता है। इसमें क्रियात्मक

A Quality Product from Chitra

पक्ष के शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति पर बल दिया जाता है।

अनुवर्ग व्यूह रचना को किस प्रकार प्रयोग मे लाया जाये :-

1. विद्यार्थियों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना।
2. विद्यार्थियों की योग्यताओं, रुचियों तथा क्षमताओं की जानकारी प्राप्त करना।
3. व्यक्तिगत तथा सामूहिक अनुदेशन प्रदान करना।
4. उपचारात्मक अनुदेशन की व्यवस्था करना।
5. मूल्यांकन तथा प्रतिपुष्टि करना।

Merits :-

1. यह व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों प्रकार के शिक्षण हेतु प्रयोग की जा सकती है।
2. इस व्यूह रचना में निदानात्मक तथा उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जाती है।
3. यह व्यूह रचना ~~में निदानात्मक तथा उपचारात्मक~~ धीमी गति से पढ़ने वाले तथा शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े बालक तथा प्रतिभाशाली बालकों आदि सभी विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होती है।
4. छात्रों को अपनी कठिनाइयों का समाधान करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

Demerit :- 1. कक्षा के छात्रों में प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है।

2. एक शिक्षक द्वारा सभी छात्रों की समस्याओं का समाधान करना सम्भव नही है।
3. विद्यालय के समय सारिणी, शिक्षण अधिगम परिस्थितियां तथा प्रशासन व्यवस्था अनुवर्ग व्यूह रचना के अनुकूल नही होती है।
4. शिक्षक का व्यवहार पक्षपातपूर्ण हो सकता है।
5. अधिक बोलने वाले छात्र अन्य छात्रों को बोलने का अवसर नही देते।

A Quality Product from Chitra

सुझाव:-

1. शिक्षक की रुचि के अनुसार कक्षा को प्रदान करना चाहिए।
2. शिक्षक को निष्पक्ष रूप में शिक्षण करना चाहिए।
3. प्रत्येक छात्र को समान अवसर प्रदान करने चाहिए।

Democratic Teaching Strategies

(i) Question-Answer Strategies:— प्रश्नोत्तर विधि के जन्मदाता प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात थे। इसीलिए इसे सुकरात विधि भी कहते हैं। इस विधि में छात्र के पूर्व ज्ञान के आधार प्रश्नों की सहायता से नवीन ज्ञान प्रदान किया जाता है। इसमें विषयवस्तु को छात्रों के समक्ष प्रश्नों के रूप में व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

Structure:- इस विधि के द्वारा शिक्षक छात्रों से विभिन्न प्रकार के प्रस्तावनात्मक तथा विकासात्मक प्रश्नों को पूछकर शिक्षण प्रदान करता है तथा साथ ही कठिन प्रश्नों का विवरण तथा स्पष्टीकरण भी प्रदान करता है।

"प्रश्न समस्त शिक्षण क्रिया की कुंजी है।"
—पार्कर

"Question is the key of all teaching activities"
Parkar

Types of Question:-

(i) प्रस्तावनात्मक प्रश्न [Introductivity Question]
(ii) विकासात्मक प्रश्न [Developing Question]
(iii) विचारात्मक प्रश्न
(iv) बोध प्रश्न [Under Standing Question]
(v) पुनरावृत्ति प्रश्न इत्यादि

A Quality Product from Chitra